04/12/2023

C. जाति व्यवस्था में आधुनिक परिवर्तन :-

1. भारतीय समाज का खण्डात्मक विभाजन के लक्षण में परिवर्तन
2. जन्मजात सदस्यता के लक्षण में परिवर्तन
3. अन्तर्विवाह के नियम में परिवर्तन
4. प्रतिबंधित एवं निश्चित पेशा में परिवर्तन
5. खान-पान एवं सामाजिक संबंध से जुड़े नियम में परिवर्तन
6. विशेषाधिकार एवं निर्योग्यताओं में परिवर्तन
7. सोपानीकता में परिवर्तन

3. जाति व्यवस्था की निरंतरता :-

1. समाज के खण्डात्मक विभाजन के रूप में निरन्तरता
2. जन्मजात सदस्यता के रूप में निरन्तरता
3. अन्तर्विवाही समूह के रूप में निरन्तरता
4. सामाजिक शैक्षणिक पिछड़ेपन / आरक्षण के आधार के रूप में निरंतरता
5. राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिये राजनीतिक दलों द्वारा जाति आधारित मतों के लिये जाति की निरन्तरता

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

6. जनता द्वारा दबाव समूह के रूप में अपने समूह के हितों के पक्ष में सरकारी नीतियों को प्रभावित करने के लिए संगठन निर्माण के आधार के रूप में निरंतरता

7. जातिवाद के रूप में और कुछ जाति समूहों में परंपरागत जाति पंचायत की निरंतरता

जाति व्यवस्था: संभावित प्रश्न

1. समकालीन भारत में जाति व्यवस्था के स्वरूपों की चर्चा कीजिए।
2. वर्तमान भारतीय समाज में जाति एक साथ कमजोर एवं मजबूत दोनों हो रही है चर्चा कीजिए।
3. समकालीन भारतीय समाज पर जाति व्यवस्था के सामाजिक प्रभावों की चर्चा कीजिए।
4. भारतीय जाति व्यवस्था में आधुनिक परिवर्तन एवं निरंतरता के तत्वों को दर्शाइए

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
A Trusted Learning Platform
KHAN SIR

जाति आधारित जनगणना

जनगणना :- किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोगों का सम्पूर्ण विवरण

- जाति आधारित जनगणना की शुरुआत 1881 से 1931 तक यह जारी रही। आजाद भारत की पहली जाति आधारित गणना 2011 में हुई।

जाति आधारित जनगणना का अर्थ -

किसी भी राज्य या क्षेत्र विशेष में रहने वाली जनसंख्या का जातिवार विवरण को 'जाति जनगणना' या 'जाति आधारित जनगणना' कहा जाता है।

जाति आधारित जनगणना - ऐतिहासिक विश्लेषण

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Trusted Learning Platform
KHAN SIR

PDF Notes

जाति आधारित जनगणना के पक्ष में तर्क / लाभ -

1. जाति प्रधान भारतीय समाज में विभिन्न जातियों की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्थिति की जानकारी संभव।
2. विभिन्न जातियों की सही संख्या व स्थिति के आंकलन से, उनके लिए समुचित विकास कार्यक्रमों का निर्माण एवं क्रियान्वयन संभव।

3. गरीबी रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या की मात्रा एवं प्रकृति की पहचान और इनके लिए समुचित कार्यक्रम बनाना संभव।

4. आरक्षण व्यवस्था का तार्किकीकरण संभव (स्वतंत्रता के बाद केवल SC&ST को आरक्षण और 1951 से केवल SC & ST की गणना)

5. सामाजिक न्याय से युक्त विकसित एवं आधुनिक भारत का निर्माण संभव

जाति आधारित जनगणना के विपक्ष में तर्क/हानि

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR